Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शेखावाटी प्रदेश के ग्रामीण पर्यटन स्थलों का एक समीक्षात्मक अध्ययन

संजू बिशू*

* सहायक आचार्या VSY* (इतिहास) राजकीय महाविद्यालय, आहोर, जालोर (राज.) भारत

शेखावाटी प्रदेश का नामकरण – शेखावाटी उत्तर पूर्वी राजस्थान का एक अर्द्ध शुष्क क्षत्रे है। राजस्थान के सीकर, चूरू और झुंझुनूं तीनों जिलों के सम्मिलित भागों को 'शेखावाटी प्रदेश' के नाम से जाने जाते है। इस क्षेत्र में आजादी से पूर्व 15वीं से 19वीं शताब्दी तक राव शेखा के वंशजों का शासन होने के कारण इसका नाम शेखावाटी प्रचलन में आया। 'शेखावाटी' शब्द का उल्लेख सबसे पहले 'बांकीदास की ख्यात' में किया गया था। बांकीदास के समकालीन कर्नल डब्ल्यू. एस.माली जिन्होंने वर्ष 1803 मेंशेखावाटी शब्द का प्रयागे किया। इसके बाद में कर्नल जेम्स टॉड ने शेखावाटी का पहला इतिहास लिखा 'वंश भास्कर' में शेखावाटी शब्द का प्रयोग किया जाता था। इससे पता चलता है कि शेखावाटी शब्द लगभग ढ़ाई शताब्दी पहले प्रयोग कियाजाता था। शेखावाटी का नाम राजपूत कच्छवा सरदार राव शेखा जी के नाम पर पड़ा है। राव शेखा के वंशज 'शेखावत' कहलाते हैं। शेखावाटी क्षेत्र पाषाणकाल से आजादी तक अपने गौरवशाली अतीत के लिए जाना जाता है।

शेखावाटी का ग्रामीण पर्यटन – वर्तमान शेखावाटी क्षेत्र ग्रामीण पर्यटन और शिक्षा के क्षेत्र में विश्व मानचित्रमें तेजी से उभर रहा है। यहां पिलानी और लक्ष्मणगढ़ भारत में प्रसिद्ध शिक्षा केंद्रहै। वहीं नवलगढ़, फतेहपुर, गगियासर, मलसीसर, लक्ष्मणगढ़, बलोदा, मंडावा, नवलगढ़, शाकंभरी आदि जगहों पर बनी प्राचीन बड़ी-बड़ी हवेलियां अपनी विशालता और भिति चित्रकारी के लिए विश्व प्रसिद्ध है। जिन्हें देखने देशी-विदेशी पर्यटकों का तांता लगा रहता है। पहाड़ों में सुरम्य जगहों पर बनेजीणमाता मंदिर, राणी सती मंदिर, मनसा माता, शाकंभरी माता, लक्ष्मणगढ़ का किला, नादीन लेप्रिंस हवेली, मंडावा किला, नवलगढ़, लोहार्गल मेला, बादलगढ़ किला, सीता मंदिर (झुंझुनूं) शेखावाटी क्षेत्र की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में माना जाने वाला फतेहपुर राजस्थान का एक विचित्र ऊनिंदा रेगिस्तान शहर है।

डॉ. पंकज धीरेंद्र (2021) की महत्वपूर्ण रचना 'शेखावाटी की मन्दिर वास्तुकला एवं मूर्ति कला' (आठवीं से 12वीं शताब्दी ईस्वी) में शेखावाटी क्षेत्र में अनेक मंदिर वह पर्यटन स्थलों का विस्तृत विवरण दिया है।

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से राजस्थान भारत के उन्हें प्रदेशों में से एक है। जिसका नाम अपनी प्राचीन गौरवमय में परंपरा के लिए प्रसिद्ध रहा है।इसी राजस्थान की जयपुर रियासत 16वीं से 19वीं शताब्दी के दौरान अपने रूप निर्माण, रंग-योजना तथा स्थापत्य आदि के लिए विश्व विख्यात है।शेखावाटी क्षेत्र के नवलगढ़, लक्ष्मणगढ़, फतेहपुर, मंडावा, पिलानी जिससे हमें धार्मिक सांस्कृतिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।

शेखावाटी के मंदिर, किले, हवेलियां की वास्तुकला अद्धितीय है तथा इनकानिर्माण स्थानीय वास्तुशास्त्र के मानकों पर आधारित है। ग्रामीण पर्यटन स्थलकलाकृतियो और अनोखी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।मंदिर सांसारिक जीवन पर अध्यात्म के महत्व का प्रतीक है। मंदिर एकऐसा पवित्र स्थान है। जहां प्रवेश मात्र से ही हम सकारात्मकता को महसूस करते हैं तथा ये यहां के जनजीवन को प्रभावित करते हैं और ग्रामीण पर्यटन उद्योग के महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में कार्य करते हैं। जिससे मंदिरों के आस-पास के क्षेत्रमें रोजगार प्राप्त होता है तथा वहां के लोगों को आर्थिक सम्बल मिलता है।

शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थल सांस्कृतिक झलक प्रस्तुत करते हैं। शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थलों की संस्कृति अत्यंत रोचक व अद्धितीय है। शेखावाटी की संस्कृति विविधता व विशिष्टता से भरपूर है। पहनावे से लेकर हवेलियो, खानपान और त्योहार से लेकर मेलों में यहां कई रंग देखने को मिलते हैं। जो अतीत के सैकड़ों सालों में भी अपनी चमक बरकरार रखते हुए हैं यहांकी संस्कृति में सरलता समरसता व शौर्य के साथ आस्था, उल्लास, व आनंद भी अनन्त है। और शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थल जनता के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अत: शेखावाटी ग्रामीण पर्यटन स्थलों के महत्व संस्कृति और विरासत से समाज विकसित होता है और लोग इनकी समृद्धि से भी परिचित हो जाते हैं।शेखावाटी राजस्थान का एक ऐसा ग्रामीण पर्यटन स्थल है। जहां पर कईमहल, किले, मंदिर, तीर्थ स्थल व हवेलियां स्थित है। जो इसकी सुंदरता कोबढ़ाते हैं। शेखावाटी को राजस्थान की ओपन आर्ट गैलरी के रूप में मान्यता दी गई है। शेखावाटी ग्रामीण पर्यटन की दृष्टि से काफी संपन्न है और यहां पर्यटकों के घूमने के लिए बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।

साहित्य समीक्षा – शेखावाटी क्षेत्र के इतिहास पर कई शोधार्थियों एवं इतिहासकारों ने कार्य किया है जिसमें प्रमुख रूप से महावीर पुरोहित (2010), जय हर्षनाथ, जय जीणभवानी, संजय भालोटिया ने 'शेखावाटी मे पर्यटन के पारिस्थितिकीय आधार' शोध ग्रंथ में शेखावाटी के प्रमुख पर्यटक स्थलों का स्थानिक वर्णन किया है। शेखावाटी के पर्यटक स्थलों का विशेष प्रभाव बताया है।

हरफूल सिंह आर्य की पुस्तक 'शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान, (1987) में भिति-चित्रों से युक्त इमारतो के निर्माण में राजस्थान

की बहुमुखी ऐतिहासिक, साहित्यक सांस्कृति और कला विषयक परंपराओं का निरूपण किया गया है। इस पुस्तक से शेखावाटी के ऐतिहासिक स्वरूप की महत्वपूर्ण जानकारी भी प्राप्त होती है।

लाजपतराय भल्ला की पुस्तक 'राजस्थान का भूगोल' (2014) पुस्तक से हमें राजस्थान में शेखावाटी की जलवायु, खनिज, जनसंख्या व पर्यटन आदि का अध्ययन किया गया है।

"Tourism in Rajasthan' M-phil Dissertation, university of Rajasthan Jaipur(1977) मे एम.पी. बंसल अनुसार राजस्थान में पर्यटन की अत्यधिक संभावनाएं हैं। यहां भव्य दुर्ग, हवेलियां, व ऐतिहासिक इमारतें विद्यमान है। जो स्थापत्य कला की शिल्प सौंदर्य से परिपूर्ण है। पर्यटन को बढ़ावा देने से राजस्थान के आर्थिक विकास में यह सहायक हो सकता है। अत: इस लेख से राजस्थान एवं शेखावाटी की ग्रामीण पर्यटन की आवश्यक जानकारी प्राप्त होती है।

Ilay Cooper ने अपनी यात्रा वृतांत "Rajasthan Exploring Painted Shekhawati'(2014) मे शेखावाटी ग्रामीण पर्यटन स्थल रामगढ़-शेखावाटी से अपनी यात्रा आरंभ कर शेखावाटी के विभिन्न नगरों से गुजरते हुए यहां के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन की कई पहलुओं के बारे में बताया है। इस पुस्तक में मौजूद भित्ति चित्रों से युक्त इमारतो एवं पर्यटन स्थलों की जीवंत झांकी देखी जा सकती है। शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थल के अध्ययन की दृष्टि से पुस्तकअत्यंत है।

डॉ. रीता प्रताप (2021) ने अपने ग्रंथ 'भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास' लिखा डॉ. मीनाक्षी कासलीवाल भारती (2013) ने 'भारतीय मूर्तिकला एवं स्थापत्य भूमिका कला' नामक पुस्तक लिखी। पुरा संपदा (2009-2020) पुरातत्व, एवं संग्रहालय विभाग जयपुर, शोध पत्रिका उदयपुर, पुरातत्व मैगजीन,सीकर का राजकीय संग्रहालय।

उपयुक्त नवीन अनुसंधानों के अध्ययन और पुरातात्विक स्थापत्य के स्थलों को देखने से पता चलता है कि शेखावाटी क्षत्रे में ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर एक अध्ययन की विशेष आवश्यकता है। जिससे अतीत की सांस्कृतिक महत्व को पहचान सकते हैं।

3. शोध का उद्देश्य – शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थलों के क्षेत्र में विभिन्न पर्यटन स्थलों को चिन्हित किया गया है। उनमें से विभिन्न मंदिरों, हवेलियो, किलो, तीर्थ स्थलों, के बारे में अध्ययन किया गया है तथापि अभी तक ग्रामीण पर्यटन क्षेत्र में कोई रिपोर्ट प्रकाशित नहीं हुई है। अब तक हुए अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शेखावाटी के क्षेत्र में अलग-अलग कालो में भिन्न-भिन्न पर्यटन स्थलों का निर्माण होता रहा है। इस क्षेत्र की ग्रामीण पर्यटन की विभिन्न कलाकृतियों की महता दृष्टिगोचर होती है। अध्ययन के दौरान मुझे यह अनुभव हुआ कि यद्यपि पर्यटन के क्षेत्र में अध्ययन हो चुका है। लेकिन शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन में विभिन्न कलाकृतियों में महत्व को पुन: गहन की आवश्यकता है। जैसे ग्रामीण पर्यटन स्थलों का निर्माण कैसे हुआ और विकसित अवस्था तक कैसे पहुंचे।

उदाहरणार्थ, इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों में हवेलियों की चित्रकारी किलो की महता, तीर्थ स्थलों में आस्था आदि का क्या कारण था। शेखावाटी ग्रामीण पर्यटन, कृषि गतिविधियों के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन के तत्वों के रूप में सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के बहादुरीकरण की विशेषता है और ग्रामीण पर्यटन में विभिन्न कलाकृतियों का प्रयोग किया गया है ऐसे ग्रामीण पर्यटन स्थलों के बारे में मुझे कई जानकारियां प्राप्त हुई है परंतु अभी तक उन शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थलों के बारे में अध्ययन शेष है।इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों से उस समय की सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक धार्मिक तथा लोक जीवन की स्थिति का अध्ययन महत्वपूर्ण है। प्राचीन समय से वर्तमान तक इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों के मंदिर, तीर्थ स्थलों का क्या महत्व रहा है। शेखावाटी के इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों कासमाज में प्रभाव था या नहीं इत्यादि का अध्ययन करना इस अनुसंधान के उद्देश्य में शामिल है।

शोध की समस्या – शेखावाटी क्षेत्र में ग्रामीण पर्यटन स्थलों के बारे में अलग-अलग विद्धानों द्धारा प्रकाश मे लाई गई जानकारी का अध्ययन एक विश्लेषण होना शेष है।शेखावटी ग्रामीण पर्यटन स्थलो में विशेष तौर से उनके ऊपर उत्तीर्ण कलाकृतियों के प्रयोग के कारणों को जानकारी प्राप्त करना तथा उसके महत्वको स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है। ग्रामीण पर्यटन स्थलों में हवेलियो में चित्रकला व मंदिरों में मूर्ति कला के उदाहरण देखने को मिलते हैं। उनके प्रयागे का क्या प्रयोजन था? इन पर्यटन स्थलों से शेखावाटी क्षेत्र के सांस्कृतिक जीवन का क्या महत्व एवं इस क्षेत्र में क्या स्वरूप रहा होगा। वास्तविक सांस्कृति जीवन कैसा था इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों में उत्कीरण सामग्री के आधार पर तत्कालीन संस्कृति जीवन में वास्तविक स्वरूप एवं उसकी महता को स्थापितकरने का प्रयास है साथ ही इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों को संरक्षण हेतु किया गया प्रयास भी है।

शोध की परिकल्पना – प्रस्तुत शोध प्रबंध में ग्रामीण पर्यटन स्थलो में शिलालेख एवं स्मारकों में अंकित कला व संस्कृति के विभिन्न आयामों को निकटता से समझने का प्रयास किया है। इन पर्यटन स्थलों से कला एवं संस्कृति के मूल्यों को खाजे कर वर्तमान समाज में उसके महत्व का अवलोकन करने का प्रयास किया है।अध्ययन कालीन पर्यटन स्थलों का वर्तमान सामाजिक जीवन से तुलना कर उस समय के समाज की जातियो उनके द्धारा बोली जाने वाली भाषा तथा वर्ण व्यवस्था के साथ ही उनके मुख्य कार्य, आय के स्रोतो को भी जानने का प्रयास है।ग्रामीण पर्यटन स्थलों से समाज की व्यवस्था के साथ-साथ धार्मिक जीवन तथा सारंकृतिक स्थिति का भी अध्ययन करने का प्रयास है। ग्रामीण पर्यटन से कला एवं संस्कृति के क्षत्रे में सर्वेक्षण विभिन्न हवेलिया, तीर्थ स्थलो, मंदिरों आदि के द्धारा अध्ययन करने का प्रयास भी किया गया है। किले, हवेलियां, मंदिर व तीर्थ स्थलों के आधार पर ग्रामीण पर्यटन स्थलों का महत्व उजागर होता है।

शोध पद्धति – ग्रामीण पर्यटन स्थलों का वर्गीकरण (किला, महल, मंदिर, तीर्थ-स्थल, हवेलियां) करके विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है। ग्रामीण पर्यटन स्थलों में कलाकृतियों का गंभीर परिमॉर्गन करने हेतु गावं-गांव में पर्यटन स्थलों तक किया है। ग्रामीण पर्यटन के परिमार्गन से देखे गए पर्यटक स्थलों का वर्गीकरण (सुरक्षित, खंडहर, अवशेष) किया जा रहा है,लेख क्षेत्र में देखे गए पर्यटन स्थल का वर्गीकरण मंदिरों का धर्म के आधार पर और आर्थिक आधार पर किया है। इसके अध्ययन के लिए प्राथमिक और द्धितीयस्त्रोत का उपयागे किया गया है।इसका तत्कालीन समाज का इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर क्या प्रभाव पड़ा है। तथा इन पर्यटन स्थलों का उस समय की राजनीतिक, धार्मिक आर्थिक व सांस्कृतिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है।शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थलों का राजस्थान व भारत के अन्य पर्यटन स्थलों से तुलनात्मक विश्लेषण किया जा रहा है। इसके विश्लेषणात्मक अध्ययन के द्धारा यह पता लगाया है कि ग्रामीण पर्यटन स्थलों को कैसे विकसित किया जाए।ग्रामीण पर्यटन स्थलों से प्राप्त

कलाकृतियां वर्तमान काल में भी अपना विशेष स्थान बनाए हुए हैं। यह उपलब्धि अचानक नहीं मिलती है। इनकी समुचित पृष्ठभूमि है और वहीं से उन्नत अवस्था तक पहुंची है। इनके बारे में समुचित अध्ययन किया जाना अपेक्षित है।

शोध अंतराल – शेखावाटी क्षेत्र के पाषाणकालीन इतिहास पर डॉ. मुरारी लाल शर्मा (2018)ने अपने अनुसंधान ग्रंथ 'राजस्थान की शैल चित्रकला' में शेखावाटी क्षेत्र केस्थलों का पुरातात्विक महत्व बनाया। जिसके आधार पर कह सकते है कि यहांग्रामीण पर्यटन स्थल पर कार्य होना शेष है।

डॉ. मदन लाल मीना (2020) ने अपने अनुसंधान ग्रंथ 'शेखावाटी क्षेत्र का प्रागैतिहासिक एवं आद्यऐतिहासिक पुरातत्व' में शेखावाटी के पुरातात्विक स्थलोंका बारीकी से अध्ययन किया है। इस पुस्तक के आधार से पता चलता है कि शेखावाटी क्षेत्र में अभी ग्रामीण पर्यटन स्थलों की महता को पहचानना शेष है। डॉ. पंकज धीरिन्द्र (2021) की महत्वपूर्ण रचना 'शेखावाटी की मन्दिर वास्तुकला' (आठवीं से बारहवीं शताब्दी ईस्वी) में शेखावाटी क्षेत्र के अनेक मन्दिरों का विस्तृत विवरण दिया गया है। डॉ. रीता प्रताप (2021) ने अपने ग्रंथ 'भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला काइतिहास' लिखा पुरा संपदा (2009–2023) पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग जयपुर, पुरातत्व मैंग्जीन, सीकर का राजकीय संग्रहालय।

उपर्युक्त नवीन अनुसंधान ग्रंथों के अध्ययन और पुरातात्विक स्थापत्य के स्थलों, तीर्थ स्थलों, किलो, हवेलियों को देखने से पता चलता है कि शेखावाटी क्षेत्र में ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर एक अध्ययन की विशेष आवश्यकता है। जिससेग्रामीण पर्यटन स्थलों को पहचाना जा सके।

शोध का महत्व – शेखावाटी में ग्रामीण पर्यटन स्थलों का जरूरी कायाकल्प करने और सैलानियों को पर्यटन स्थलों का संपूर्ण अनुभव प्रदान करने में ग्रामीण पर्यटन स्थलों के संसाधन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यदि शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थलों की पूरी क्षमता विकसित कर दी जाए तो उन ग्रामीणों को रोजगार प्रदान कर सकता है जिनका शहरो की ओर पलायन बढ़ता जा रहा है।इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों से हमें सामाजिक स्थिति व व्यापारिक महतासमाज की वर्णव्यवस्था स्थानीय लोगों की आर्थिक व्यवस्था का स्वरूप कैसे हैं यहां रहने वाले लोगों का ग्रामीण पर्यटन स्थल में क्या योगदान रहा?शेखावाटी क्षत्रे में ग्रामीण पर्यटन स्थलों का विकास किन परिस्थितियों में हुआ। शेखावाटी क्षत्रे में जो ग्रामीण पर्यटन स्थल विद्यमान है वो प्रकाश में आएंगे उनका महत्व प्रतिपादित किया जायेगा। जो उनके संरक्षण का मुख्य आधारहोगा। अत: पर्यटन स्थलो एवं धरोहर को संरक्षित करना भी इस शोध की विषय के चयन का एक कारण रहा है। वर्तमान सामाजिक जीवन में आर्थिक दृष्टि कीआकांक्षाओं ने मानव को तथाकथित बना दिया है। प्राकृतिक संसाधनो के अधिकाधिक दोहन करने की लालसा में यह ग्रामीण पर्यटन स्थल भेंट चढ़ते जारहे हैं। अत: इनका प्रलेखन कार्य अत्यंत आवश्यक हो गया है। इस जानकारी के उपरांत ग्रामीण पर्यटन क्षेत्र में शोध के नए आयाम लक्षित होंगे।

डॉ. एच. एस आर्य (2020) ने अपनी पुस्तक 'शेखावाटी का राजनीतिक व सांस्कृतिक इतिहास',पंडित झाबरमल शर्मा ने 'सीकर का इतिहास (1922)', 'खेतड़ी काइतिहास (1927)' व 'खाटूश्याम जी का इतिहास' लिखा 'रतनलाल मिश्रा (1998)' ने 'शेखावाटी का नवीन इतिहास' लिखा तथा गोपीनाथ शर्मा वह गौरीशंकर, हीराचंद ओझा, ने राजस्थान के इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन आदि ग्रंथो के अध्ययन से शेखावाटी ग्रामीण पर्यटन स्थलों कीजानकारी उपलब्ध होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. आर्य, एच.एस. : 2020, शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर।
2. डॉ. पंकज धरेन्द्र : 2021 शेखावाटी के मन्दिर वास्तुकला और मूर्तिकला, (8वीं से 12वीं शताब्दी) महावीर पब्लिकेशन, जयपुर।
3. मीणा डॉ. मदनलाल : 2020, शेखावाटी क्षेत्र का प्रागैतिहासिक एवं आद्यैतिहासिक पुरातत्व, लिट्रेररी सर्किल्स, जयपुर।
4. मेहता डॉ. अमित : 2022, शेखावाटी का इतिहास और स्थापत्य (16वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक), यूनिक ट्रेडर्स जयपुर।
5. मील, संदीप कुमार : 2018, शेखावाटी की लोक संस्कृति, प्रकाशन विभाग,सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
6. शेखावत्, सुरजन सिंह : 1989, शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास,सुरजन सिंह शेखावत स्मृति संस्थान प्रकाशन, झाझड़, झुंझुनूं।
7. आर्य, हरफूल सिंह : 1987, शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
8. भल्ला लाजपत राय : 2014, 'राजस्थान का भूगोल', कुलदीप पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
9. भालोटिया, संजय : 2004, शेखावाटी में पर्यटन के पारिस्थितिकीय आधार,शोध प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
10. Cooper, Ilay : 2014, Rajasthan : Exploring Painted Shekhawati, Niyogi Books, New Delhi, 2014
11. Bansal, M.P. : 1977, Tourism in Rajasthan, University of Rajasthan, Jaipur
12. स्वामी चेतन : जून 2005, फतेहपुर की चित्रांकित हवेलिया, भित्ति–चित्रअंक शेखावाटी बोध।
13. महरिया भंवरलाल : 2005, मंडावा की भित्ति–चित्रकला, भित्ति–चित्र अंक शेखावाटी बोध, जून 2005।
14. भारद्धाज, विनोद : 2015 मरूधरा का गौरव शेखावाटी, राजस्थान सुजस।
15. शर्मा झाबरमल : 1922, सीकर का इतिहास, 'खेतड़ी का इतिहास 1927' व 'खाटूश्याम जी का इतिहास' राजस्थान एजेंसी कलकत्ता।
16. शर्मा, महेश कुमार : 2004, शेखावाटी के स्थापना स्तम्भ, राजस्थान साहित्य संस्थान जोधपुर।
17. मनोहर, डॉ. राघवेंद्र सिंह : 2010, राजस्थान के प्रमुख शक्तिपीठ, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
18. वशिष्ठ, नीलिमा : 1989, स्कल्पचर्स ट्रेडीशंस ऑफ राजस्थान, जयपुर 2001, राजस्थान की मूर्तिकला परम्परा, जयपुर।
19. शर्मा गोपीनाथ : 1990, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
20. व्यास, डॉ. राजेश कुमार : 2019, सांस्कृतिक राजस्थान, राजस्थान हिन्दीग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
21. ओझा, गौरीशंकर हिराचन्द : 2010, राजपूताने का इतिहास, राजस्थान ग्रन्थागार, जोधपुर।

22. टॉड, कर्नल जेम्स : 1971, राजस्थान का इतिहास भाग–1 एवं भाग–2,साहित्यागार जयपुर '2008'।
23. Rajasthan History Congress, Volume - 34, December 2019
24. Rajasthan History Congress Department of History J.N.V. University, Jodhpur
25. सुरजन सिंह झाझड़ : 1983, राव शेखा, सीकर।
26. सूर्यनारायण शर्मा, खंडेला का इतिहास, आगरा।
27. उदयवीर शर्मा : 2000 शेखावाटी का लोकरंग, राजस्थान साहित्य समितिबिसाऊ।
28. पी.एस. प्रकाश, शेखावाटी वैभव, शेखावाटी इतिहास शोध संस्थान, शिमला(झुंझुनू)।
29. नारायण सिंह : 1960, शेखावाटी का भूगोल जयपुर।
30. निरंजन जोशी : 1960, बिसाऊ का इतिहास (हस्तलिखित) बिसाऊ।
31. डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा : 2001, तोरावाटी का इतिहास, लोक भाषा प्रकाशन, कोटपूतली।
32. रघुनाथ सिंह शेखात, शेखावाटी का सांस्कृतिक इतिहास।
33. भूरसिंह मलसीसर, विविध संग्रह (शेखावाटी का इतिहास) हस्तलिखित,जयपुर।

अभिलेखागारीय सामग्री :

1. पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।
2. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।
3. जिला सूचना केन्द्र सीकर व झुंझुनूं।
4. जीणमाता का शिलालेख विक्रम संवत् 1196।
5. हर्ष का शिलालेख विक्रम संवत् 1030।

पत्र पत्रिकायें :

1. आर्कियोलॉजीकल स्टडीज
2. पुरातत्व, नई दिल्ली
3. परम्परा (शोध पत्रिका) चोपासनी
4. रिसर्चर, (राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, जयपुर)
5. शोधक जयपुर
6. मरू श्री पत्रिका चूरू (त्रैमासिक)
7. मरू – भारती, पिलानी
8. राजस्थान साहित्य संस्थान, झुंझुनूं

****